अमर उजाला
महोत्सव विश्वास का

- 6 राज्य
- 2 केंद्रशासित प्रदेश
- 21 संस्करण

हिमाचल •••
वर्ष 23 । अंक 329 । पृष्ठ : 16+16 । मूल्य : पांच रुपये

अमर उजाला

चंडीगढ़
शुक्रवार, 17 जून 2022
आषाढ़ कृष्ण-तृतीया/चतुर्थी
विक्रम संवत-2079

amarujala.com

सहारे की उम्मीद **पाकिस्तान के विदेश मंत्री भुट्टो ने की भारत से जुड़ाव की वकालत...दुनिया**

हिमाचल प्रदेश

फिल्मी पटकथा को भी नाटक की तरह साहित्य में मिलना चाहिए स्थान : गुलजार

शिमला में अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव उन्मेष शुरु, केंद्रीय राज्य मंत्री मेघवाल ने किया उद्घाटन, गीतकार और फिल्मकार गुलजार बोले- आज सिनेमा साहित्य अकादमी की बगल में खड़ा, अब कहानी उठाए बगैर हो रहा काम

अमर उजाला ब्यूरो

शिमला में अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव का शुभारंभ करते केंद्रीय राज्य मंत्री मेघवाल। अमर उजाला

कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे गीतकार और फिल्म निर्देशक गुलजार।

शिमला। बॉलीवुड के जाने-माने गीतकार, कवि और फिल्मकार गुलजार ने कहा है कि फिल्मी पटकथा संवाद को भी नाटक की तरह साहित्य में स्थान मिलना चाहिए। यह बात उन्होंने वीरवार को शिमला में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव उन्मेष के शुभारंभ पर कही।

केंद्रीय संस्कृति राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने इस उत्सव का उद्घाटन किया। गुलजार ने कहा कि यह विचार-विमर्श साहित्य और सिनेमा पर हो रहा है। आज सिनेमा साहित्य अकादमी की बगल में खड़ा है। सिनेमा भी अभिव्यक्ति की एक नई जबान पैदा हुई है। मूविंग इमेज से लेकर तकनीकी विकास तक सिनेमा ने आज तक की एक लंबी यात्रा तय की है। जब कहानी सुनाने की बात आई तो कहानियों की तलाश चली। यह उत्सव 18 जून तक चलेगा। इसमें देश-विदेश के 425 से अधिक लेखक भाग ले रहे हैं। पहले दिन 'सिनेमा और साहित्य' पर जबरदस्त सत्र हुए। पहले सत्र की गीतकार गुलजार ने अध्यक्षता की। इसमें फिल्म निर्देशक विशाल भारद्वाज, गौतम घोष, पद्म विभूषण सई परांजपे सहित बॉलीवुड की कई हस्तियों ने चर्चा में हिस्सा लिया। गुलजार ने कहा कि जब सिनेमा शुरू हुआ तो भारत में कहानियों की कमी नहीं थी। महाभारत, रामायण, लोक साहित्य जैसी चीजें रहीं। समय बीतने के बाद तकनीक के साथ हाथ-पांव खुल गए। अब यह यात्रा रोचक अंदाज में पहुंच गई है। यह सिनेमा ही लग रहा था। इसे साहित्य कहने की हिम्मत नहीं होती थी। साहित्य से केवल कहानियां उठाई जाती थीं। अब सिनेमा की अपनी जमीन बन गई है। सिनेमा साहित्य को आगे पहुंचाने का एक बड़ा स्रोत बन गया। अब ख्याल किसी और का,

पहले दिन सात स्थानों पर हुए 18 कार्यक्रमः इस उत्सव के पहले दिन सात स्थानों पर 18 कार्यक्रम हुए। गेयटी थियेटर और टाउन हॉल में छह स्थानों पर कार्यक्रम हुए।

कहानी किसी और की और सिनेमा में फिल्म बनाने वाला कोई और है। सिनेमा उस जगह पर आया है कि कई जगह कहानी उठाए बगैर काम हो रहा है। अब सिनेमा बड़ा हो गया है। इसका कद बढ़ा है। >> विशेष पेज 11 पर